

पाठ—4 कठपुतली

कवि भवानीप्रसाद मिश्र

कवितांश में कवि ने कठपुतलियों की स्वतंत्रता की इच्छा और आत्मनिर्भरता की भावना को व्यक्त किया है।

कवि ने बंधन में बंधी कठपुतली की तड़प को व्यक्त किया है

कठपुतलियों के मन में भी आजाद होने की इच्छा व्यक्त की है।

कठपुतली सोच समझकर इस ओर कदम उठाना चाहती है।

कठपुतली अब अपने स्वतंत्र होने के बारे में सोच रही है।

प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने
राजस्थान के प्रसिद्ध खेल परंपरा का
ज्ञान कराया है ।

कठपुतली काठ अर्थात् लकड़ी की बनी
होती है ।

निर्जीव वस्तु के माध्यम से स्वतंत्रता के
महत्त्व पर प्रकाश डाला है ।